(खण्ड - ग)

उ. 8 - क) उपर्युक्त काव्यांश 'सहर्ष स्वीकारा है' नामक पाठ से ली गई है, यहाँ कवि बड़ी सहजता से कहते हैं कि वे अपने जीवन के सुख - दुख, उतार - चढ़ाव, अनुभव इत्यादि जो कुछ भी उनके जीवन में है वह सब वह खुशी के साथ स्वीकार कर लिए हैं क्योंकि उनके जीवन में जो भी है वह सब उनकी प्रिया को अत्यधिक प्यारा है, इस प्रकार कवि सरलता के साथ अपने जीवन की सभी उपलब्धियों, असफलताओं एवं अन्य भी चीजों को स्वीकारे हैं।

ख) गरीबी को व्यक्त करने के लिए कवि ने एक विशेषण का उपयोग किया है - 'गरबीली' 'गरबीली गरीबी' कहकर कवि यह भाव स्पष्ट करना चाहते है कि उनके जीवन की यह गरीबी कोई मजबूरी नहीं है अपितु गर्व से अपनाई गई यह गरीबी स्वाभीमान के समान है। वह स्वाभीमान और प्रसन्नता के साथ इस गरीबी की स्थिति में जीवन ~~आपन~~ यापन कर रहे हैं।

ग) 'भीतर की सरिता' से कवि का आशय है उनके हृदय में बहते भाव, विचार अथवा प्रेम, कवि कहता है कि यह यह सब मौलिक है क्योंकि यह सब

उ. 9 - क) ख) ii) iii) iv)

उ. 10 - 1)

उसने स्वंय अपने प्रिय की प्रेरणा से प्राप्त किया है, ~~उसके~~ उसकी ज़िन्दगी हर ओर से उसके प्रिय से घिरी हुई है और उसके 'भीतर की सरिता' भी उसके प्रिय की ही देन है।

उ.- 9-क) भाव सौंदर्य : इन पंक्तियों में कवि आकाश को ~~~~ में फैले अँधेरे को काली सिल के समान बता रहे हैं, यह भोर के समय का दृश्य है, जब इस भोर के नभ में सूर्य की किरणें फूटने लगती है तो अँधेरे और सूर्य की हल्की लाली दोनों मिलकर ऐसा सौंदर्य बिखेरती है कि कवि को लगता है मानो काली सिल लाल केसर से धुल गई हो या फिर स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया चाक मिट्टी पोत दी हो, यहाँ पर काली सिल और स्लेट अँधेरे को स्पष्ट करता है और लाल केसर एवं लाल खड़िया चॉक सूर्योदय की लाली को।

ख) शिल्प सौंदर्य : i) काव्यांश की भाषा सरल, सहज, सुबोध ~~एवं~~ है।
ii) यहाँ ग्रामीण परिवेश की सुबह का चित्रण किया है ~~कवि~~ ने।
iii) 'बहुत काली .... धुल गई हो' पंक्ति में उपमा अलंकार है।
iv) 'स्लेट पर ... मल दी हो किसी ने' पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

उ.- 10-क) 'कैमरे में बंद अपाहिज' करूणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की

16

कविता है, इसका चित्रण कवि ने बड़े अच्छे तरीके से किया है, कविता ऊपर से तो एक अपंग व्यक्ति की पीड़ा को व्यक्त करता है परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही है, यह सामाजिक उद्देश्य को प्रस्तुत करने वाली कविता प्रतीत होती है परंतु सच्चाई तो यह है कि कार्यक्रम संचालक को अपंग की पीड़ा से कोई सरोकार नहीं है, वह अपंग की पीड़ा को बेचना चाहता है और एक रोचक कार्यक्रम बनाना चाहता है जिससे अधिक से अधिक लोग उसके कार्यक्रम को देखे और उसे अच्छा मुनाफा मिल सके, यह कविता इस सत्य को उजागर करती है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले अत्यधिक कार्यक्रम कारोबारी दबाव के कारण संवेदनशील होने का दिखावा करते है,

उ:- 11-क)

उ:10-ख) मनुष्य के हृदय में प्रायः अनेक बातें आती रहती है और वह इन बातों, भावनाओं को सरल रूप से एक-दूसरे को बताता है या बाँटता है, परंतु ऐसी स्थिति भी हो सकती है जब व्यक्ति को एक सरल सी बात कहनी हो परंतु उसके लिए वह जटिल शब्दों और भाषा का उपयोग करे, यही स्थिति कविता 'बात सीधी थी पर' में दिखाई गई है कवि के हृदय में एक सरल सी बात आई थी जिसे वह प्रस्तुत करना चाहते थे परंतु

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

16

सरलता का मार्ग छोड़कर कवि ने जटिलता का पथ अपनाया, कवि ने सोचा क्यों न बात को व्यक्त करने के लिए जटिल शब्दों और उत्तम भाषा का प्रयोग किया जाए, इसका परिणाम यह हुआ कि कवि की बात का प्रभाव ही खो गया, बात निरर्थक होकर बेकार भाषा के चक्कर में घूमने लगी, कवि वाक्यांशों को, शब्दों को, वाक्यों को काट-छाट करने की कोशिश की परंतु कोई लाभ नहीं हुआ, इस प्रकार कभी-कभी सीधी बात भी भाषा के चक्कर में टेढ़ी हो जाती है, अतः हम कह सकते हैं कि सही बात का सही सरल शब्दों और भाषा के साथ जुड़ना होता है,

उ:- 11-क) बालकों के झुंड को जो किशोर आयु के होते थे जैसे बारह से सोलह वर्ष के आयु के उन्हें इंद्र सेना कहा गया है, वे झुंड में एक साथ बाहर निकलते थे ~~निर्वस्त्र~~ होकर बिना छाती पर वस्त्र धारण किए, इन्हें इंद्र सेना इसलिए कहा गया है क्योंकि ये गली-गली घूम-घूमकर इंद्र भगवान से पानी माँगते थे और स्वयं को इंद्र की सेना समझते, इनका मानना था कि भगवान पानी वाले बादलों की वर्षा तभी करेंगे जब लोग इन बच्चों की टोली को सूखे में भी पानी देकर प्रसन्न करेंगे,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

22

ख) लेखक को यह बात समझने में कठिनाई होती है कि जब चारों ओर पानी की इतनी कमी है, चारों ओर सूखा पड़ा है तब भी लोग मुश्किल से एत्रित किया पानी इंद्र सेना पर बाल्टी-बाल्टी उलटकर पानी की ~~प~~ को व्यर्थ में ~~क्यों~~ क्यों बहाते हैं ? (2-क)

लेखक को यह बात इसलिए नहीं समझ आती है क्योंकि वह इसे अंधविश्वास मानते थे कि इंद्र सेना पर पानी फेंकने से इंद्र देवता ~~पर~~ प्रसन्न होते हैं, लेखक के अनुसार यह सब बेवकूफी थी,

ग) लेखक को इंद्र सेना पर ~~क~~ पानी फेंका जाना पसंद नहीं था, लेखक के लिए यह मूल्यवान था यूँ कहिए कि बहुमूल्य पानी की बरबादी लगती थी, इसलिए कवि ने इसे पानी की निर्मम बरबादी कहा है, सूखे के समय मनुष्यों को, पशुओं को पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता था और कठिनाई से जमा किया हुआ पानी भी बड़ी निर्ममता से लोग बच्चों की टोली पर डाल देते थे इसलिए यह पानी की निर्मम बरबादी बताई गई है, (ख)

22

12-क) भक्तिन के महादेवी वर्मा के जीवन में प्रवेश करने से वह महादेवी वर्मा जी को देहातिन बना दी थी, यह सत्य भी है क्योंकि भक्तिन लेखिका को देहाती भोजन खाने को विवश करती थी, वह एक अँगुल मोटी रोटी बनाती थी और उसके साथ गाढ़ा दाल थाली में परोस देती थी, यदी सब्जी पकाती तो दाल नहीं पकाती, भक्तिन को दूध, दही, घी यह सब पसंद नहीं था तो वह लेखिका को भी यह सब खाने को नहीं देती थी, वह लेखिका को बताती थी कि बाजरे का तिल लगाकर बनाया गया पुआ गरम कम अच्छा लगता है, मकई का रात को बना दलिया सवेरे बने मट्ठे से अधिक सोंधा लगता है, ज्वार के भुने भुट्टे के हरे दानों की खिचड़ी बड़ी स्वादिष्ट होती है और सफेद महुए की लप्सी संसार भर के हलुए को लजा सकती है, इस प्रकार भक्तिन लेखिका को तो देहातिन बना दी थी परंतु शहर का एक रसगुल्ला भी भक्तिन के पोपले गाल में प्रवेश नहीं कर पाया था।

ख) चूरन वाले भगत जी पर बाज़ार का जादू नहीं चल सका क्योंकि वे खाली मन से बाज़ार नहीं जाते थे, उन्हें पता होता था कि उन्हें बाज़ार से क्या चाहिए, वे बाज़ार के चकाचौंध में स्वंय पर नियंत्रण रख पाते थे और सुंदर और आरामदायक चीजों को

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

32

देख कर भी धैर्य बनाए रखते थे, वे धैर्यवान व्यक्ति थे और आत्म संतोषी भी, उनके मन में अधिक से अधिक चीज़ों को जोड़ने की चाह या इच्छा नहीं थी, इस प्रकार वे लालची व्यक्ति नहीं थे और लोभ का भगत जी से कोई रिश्ता नहीं था, इस सब के साथ भगत जी के पास बाज़ार जाते समय अत्यधिक धन नहीं होता था जितने पैसों की आवश्यकता हो केवल उतना ही धन लेकर पंसारी की दुकान पर जाते और जीरा और काला नमक खरीद लेते, वह छह आने से ज़्यादा कभी नहीं कमाते थे, इस प्रकार धन के प्रति वह लालची नहीं थे, एक सीधे साधे आत्म संतोषी व्यक्ति थे, घ)

ग) एक बार श्यामनगर के मेले में लुट्टन गया था, वहाँ पंजाबी पहलवानों की कुश्ती चल रही थी, लुट्टन से रहा नहीं गया और वह चाँद सिंह जिसे शेर का बच्चा कहा जाता है उसे चुनौती दे दी, कुश्ती में चाँद सिंह उसे ज़ोर से दबोच लिया और महाराजा के आदेश पर कुश्ती रुकवा दी गई, परंतु लुट्टन राजा से प्रार्थना किया कि उसे लड़ने दिया जाए और अंत में राजा ने उसे एक मौका दे दिया, दर्शक जन भी बड़े उत्साह के साथ चाँद सिंह और लुट्टन की कुश्ती देखने

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

रहे थे, लुट्टन ने सबको चकित करते हुए चाँद सिंह को कुश्ती में हरा दिया, लोग अपनी दुकानों को बंद करके दौड़े थे दोनों की कुश्ती को देखने और अब दर्शक जय-जयकार करने लगे, इस प्रकार श्यामनगर के मेले में कुश्ती में चाँद सिंह को हराकर लुट्टन ने राजकीय पहलवान का दर्जा प्राप्त किया था,

ख) सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से इसलिए मना किया क्योंकि यदि कस्टम वाले वह पुड़िया देख लेते तो सफ़िया के सामान की चिंदी-चिंदी कर देते और साथ ही सफ़िया और उसके भाई की बदनामी होती, भारत में नमक की कोई कमी नहीं थी इसलिए भी नमक ले जाने से सफ़िया को उसके भाई ने रोका था,

उ० 13) सिंधु घाटी सभ्यता संपन्न थी परंतु उसमें आडंबर नहीं थे, यहाँ सुनियोजित शहर थे, सड़के चौड़ी व छोटी दोनों प्रकार की थी, पानी की अच्छी व्यवस्था थी, लोग खेती करते थे, लोगों के पास ताँबे का ज्ञान था, वे अपने सामान की निर्मिती भी करते थे, ताँबे का दर्पण, काँसे का बर्तन, चाक पर बने विशाल मृद-भांड, उनपर बने चित्र,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

10

चौपड़ की गोटियाँ, रंग-बिरंगे पत्थरों से बने मनकों वाले हार, सोने के गहने आदि सब उनकी संपन्नता के सपन थे, यहाँ के लोग साफ-सफाई का बहुत ध्यान रखते थे, यातायात के लिए बैल-गाड़ी का प्रयोग करते थे, उनके मकानों में गृहस्थी की सभी सुविधाएँ थी, भंडार गृह हमेशा भरे रहते थे ये लोग मूर्तियाँ बनाने में दक्ष थे, इनके समाज में एक रूपता थी, कला में सुरुची थी, जो राज ~~प्रसाद~~ पोषित या धर्म ~~प्रसाद~~ पोषित न हो समाज पोषित था, इस समाज में संपन्नता होने पर भी आडंबर का अभाव था यहाँ विशाल भवन, मंदिर नहीं थे, राजाओं एवं महंतो की समाधियाँ भी नहीं है, मूर्ती और औजार सब आकार में छोटे होते थे नरेश के सिर पर का मुकुट आकार में बहुत ही छोटा था, नावें भी छोटी होती थी और मकान भी छोटे-छोटे बनते थे, इन मकानों के कमरे तो और भी छोटे होते थे, अतः सिंधु ~~सभ्यता~~ सभ्यता आडंबर विहीन सभ्यता थी,

(4-ग) यशोधर बाबू की पत्नी समय के अनुसार अपने अंदर आवश्यक परिवर्तन लाने में सफल रहती है परंतु यशोधर ऐसा नहीं कर पाते क्योंकि यशोधर किशनदा की लीक

पर चलते थे, वे उनके बताएँ मूल्यों का साथ नहीं छोड़ना चाहते थे, वे पूर्ण परम्परावादी मानसिकता के व्यक्ति थे, जैसे किशनदा ने उन्हें जल्दी सोना और सुबह सवेरे उठना सिखाया था, इसके अतिरिक्त रिश्तेदारों से जुड़ाव और हर खुशी व दुख के अवसर पर रिश्तेदारों को याद करना भी किशनदा ने यशोधर को बताया था, भारतीय संस्कृति से जो यशोधर का लगाव था उसका कारण भी किशनदा ही थे, जैसे यशोधर रामलीला वालों को घर का एक कमरा दे दिया करते थे, जनेउ बदलने के लिए कुमाउँनियों को यशोधर अपने घर पर आमंत्रित करते थे और होली में भजन गवाना, यह सब यशोधर के परिवार वालों को नहीं भाता था, परंतु यशोधर के संस्कार यह सब उन्हें छोड़ने नहीं देते थे, यशोधर भारतीय रीती, संस्कृति के पुजारक थे, इसलिए उन्हें अपनी बेटी का जींस पहनना, पत्नी का बिना बाँह का ब्लाउज पहनना पसंद नहीं था, इस प्रकार यशोधर पुराने रीती-रिवाजों को पकड़े बैठे थे और उनकी पत्नी बच्चों के साथ आधुनिक 'मोड' बन रही थी, किशनदा का प्रभाव यशोधर पर इतना गहरा था कि वे अपने अंदर परिवर्तन लाने में असफ थे,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

12

44

14-घ) 'जूझ' शीर्षक कथाकार के परिश्रमी प्रवृत्ती को उजागर करता है लेखक ने जीवन के हर मोड़ पर संघर्ष किया था, लेखक के अंदर दृढ़ता थी, आत्म विश्वास था और वे जुझारू प्रवृत्ती के थे, वे कभी हार न मानकर आगे बढ़ते रहे इस संदर्भ में पाठ का शीर्षक पूर्ण रूप से सार्थक और उचित है, निम्नलिखित तर्क एवं कथ्य यह सिद्ध करते है

i) लेखक ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया, पिता द्वारा पाठशाला न भेजे जाने पर व हार न मानकर योजना बनाए, माँ और देसाई सरकार की मदद ली।

ii) कक्षा के विपरीत परिस्थितियों से भी संघर्ष करना पड़ा था, शरारती बच्चों द्वारा परेशान किए जाने पर वह अपना वस्त्र बदलकर कक्षा जाने लगे थे।

iii) वे अत्यंत मेहनत के साथ पढ़ाई-लिखाई करने लगे जिससे गणित समझ में आने लगा और एक होनहार छात्र बन गए।

iv) वसंत पाटिल नामक दोस्त की संगति ने उन्हें पढ़ाई की ओर और प्रेरित किया और वे कक्षा में प्रथम आए।

v) लेखक ने कवि बनने के लिए भी संघर्ष किया, पशुओं को चराते समय या खेत पर काम करते समय भी वह कविता

निर्माण करते थे और फिर मराठी मास्टर को दिखाते थे, मास्टर की सहायता से लेखक को एक अच्छा कवि ~~बनने में~~ बनाया। इस प्रकार पूरे जीवन या कथा में लेखक ने संघर्ष किया और 'जूझ' शब्द का अर्थ भी संघर्ष होता है इस प्रकार यह शीर्षक उचित और सार्थक है।

(२१०९ – क)

उ.! 1-(क) जीवन जीने का ढंग मतलब जीवन यापन करने का तरीका या मार्ग, इसके दो ढंग बताए गए हैं – औरों की सुनकर उनसे प्रभावित होकर या फिर अपने आप की सुनकर मतलब स्वंय अपना मार्ग और अपने विश्वास एवं मूल्यों के साथ।

ख) जो उधार जीता है व्यर्थ जीता है क्योंकि उसका जीवन थोथा होता है, मिथ्या होता है, उपरी दिखावा होता है, केवल ढोंग और लिपा-पुता सा जीवन होता है।

ग) जो व्यक्ति दूसरों के प्रभाव से अपने जीवन को दिशा देते हैं वे सत्य में जीवन ही नहीं जीते हैं क्योंकि ऐसे जीवन में वे केवल दूसरों की नकल करते रहते हैं, स्वंय पर कोई विश्वास

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

नहीं होता, सत्य का पता नहीं होता, न कुछ जानने की इच्छा होती है ऐसे व्यक्ति को और न ही कुछ खोजने की, एक आराम का मार्ग अपना लेते है – दूसरों के राह पर चलने का। च)

छ)

उ०:-
2-क)

घ) अनुकरण का अर्थ है अनुकरण करना अर्थात देख कर कुछ अपनाना, अन्वेषण अनुकरण से भिन्न है, क्योंकि अनुकरण में लोगों को कुछ पता नहीं होता है, सत्य, परमात्मा, एवं जिज्ञासा भी नहीं होती परंतु अन्वेषण के लिए श्रद्धा चाहिए होती है स्वंय पर श्रद्धा और तब मनुष्य का ज्ञान, उसके भीतर का जगेगा और कई बातें हीरे जवाहरात जैसी प्रतीत होंगी, दिल करेगा कि बचा लें। ख)

ग)

ङ.) निजता इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि हमें स्वंय का बोध हो, हम स्वंय सोचे, विचारे, विमर्श करें और निर्णय लें, स्वभाव की तलाश के लिए भी निजता का होना आवश्यक है और यह तब होगा जब दूसरों का सिखाया हुआ सब विदा कर दिया जाए। घ)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

घ) कर्म अनासक्त न होने पर बाँधता है।

ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक होगा — "जीवन : अनुकरण और अन्वेषण"।

उ० 2- क) लड़ने के लिए हमें थोड़ी सी सनक और थोड़ा सा पागलपन चाहिए, इसके अतिरिक्त आवाज़ को बुलंद करना पड़ेगा और मुक्त में मर जाने का हुनर।

ख) ~~समझदा~~ समझदार और सुलझे हुए लोग में पागलपन, सनक और ~~प्र~~ लड़ने का जोश नहीं होता इसलिए वे नहीं लड़ सकते।

ग) 'घर में भीषण आग लगने' से कवि का तात्पर्य जटिलताओं से है और असुरक्षित होने की स्थिति से, केवल मुसीबतों से घिरा होने की स्थिति बताई गई है।

घ) ~~मु~~ 'झुलस जाने का हुनर' का भाव है स्वयं की कुर्बानी देने से, बलि देने से है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

16

(२१०ऽ - २१)

उ० :- 5 क) विशेष लेखक के दो क्षेत्र हैं -

- न्यायालय
- फैशन और फिल्म।

ख) समाचार पत्र द्वारा अपने संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है, इसे बीट रिपोर्टिंग कहते है।

घ) महत्वपूर्ण लेखकों के लेखों की नियमित श्रृंखला को स्तंभ लेखन कहते है, इसमें लेखक के भाव अभिव्यक्त होते हैं।

ङ) समाचार लेखक के छः ककार हैं - क्या, कब, कहाँ, कैसे, कौन और क्यों।

4. आर-४२, आकरा रोड
कोलकाता-७०००२४
मिरिया ब्रूज।
दिनांक: ०९.०३.२०१९

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

64

प्रश्न-5 सेवा में,
सचिव
परिवहन मंत्रालय
कोलकाता -7000-६५

[विषय : सड़क की दुर्घटनाएँ एवं सुधार की आवश्यकता,]

महोदय,
मैं ~~मिश्रा~~ अ.ब. कोलकाता के मटियाब्रूज अंचल की निवासी हूँ मुझे यहाँ रहते लगभग बारह वर्ष हो गया परंतु इधर कुछ वर्षों से सड़क पर दुर्घटनाएँ अत्यंत तेज़ी से बढ़ती जा रही है, मैं इस विषय पर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ।
आए दिन हम समाचार पत्रों में सड़क पर होने वाली ~~दु~~ दुर्घटनाओं के बारे में पढ़ते व सुनते है, इससे लोगों की मौत तो हो ही जाती है साथ ही परिवार के सदस्यों को भारी पीड़ा भी होती है, यदी मौत न भी हो तो शरीर का भारी नुकसान होता है, अतः इन सड़क हादसों को थामने की आवश्यकता है, रात के समय तो हादसे और अधिक होते है क्योंकि परिवहन चलाने वाला या तो नशा मे चूर होता है और 'हेड लाईट' नहीं य

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

69

जमाता है या फिर कभी कभार गाड़ी की गति इतनी अधिक होती है कि समय रहते मामला संभालना आसान नहीं, अतः मेरे अनुसार इसे थामने का सुझाव उपाय यह हो सकता है कि वाहनों की गति तय की जाए और वाहन जो सड़कों पर दौड़ रहे होते हैं वे ठीक-ठाक हो अर्थात् हेड लाइट या मिरर इत्यादि सब जाँची परखी गई हो, इसके साथ-साथ लोगों को भी सचेत करना आवश्यक है। मेरे लिए सुझाव पर विचार अवश्य करें। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि जल्द ही इस विषय पर कार्य करें, इस पर गंभीरता से कोई कदम उठाए।

सधन्यवाद!

आपकी भवदीया
अ. ब।

3

'बिन मोबाइल सब सून'

आजकल यदि किसी के पास कोई एक चीज आम है या सामान्य है तो वह है 'मोबाइल', कोई रिक्शा चालक हो या बड़ा पदाधिकारी सब के पास यह यंत्र देखते

74

ही बनता है इसकी उपयोगिता भी बहुत है आज हम इस बड़े संसार के किसी भी कोने में रहे अपने सगे-संबंधियों, प्रिय जनों से क्षण भर में सम्पर्क कर सकते हैं, मोबाइल द्वारा विद्यार्थी जन शिक्षक के अभाव में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं और ~~ज्ञा~~ ज्ञान में ~~कुछ~~ वृद्धि होती है, मोबाइल द्वारा हवाई टिकट, रेल टिकट और अन्य चीजें बुक की जा सकती है, आजकल मोबाइल बच्चों को मनोरंजन करता है और मनोरंजन का भी साधन बन चुका है, यदि 'स्मार्ट फोन' हो तो केवल बात चीत तक ही ~~सीमी~~ सीमित नहीं होती उसकी उपयोगिता, उसके द्वारा हम 'ऑन लाइन' खरीदारी भी कर सकते है, साथ ही एक-दूसरे ~~र~~ के चेहरे देख कर भी बातें कर सकते थे, यह यंत्र 'मोबाइल' भौगोलिक दूरी का बहुत हद तक कम करने में सहायक रहा है, गाना सुनना, समाचार सुनना यह सब भी इस ~~मोबाइल~~ मोबाइल द्वारा संभव है अतः इसका ~~र~~ जाल इतना व्यापक हो चुका है और हमारे जीवन को यह मोबाइल इतना ~~प्र~~ प्रभावित कर चुका है कि वह ~~क~~ आज हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है और हम कह सकते है कि मोबाइल के ~~बिना~~ अभाव में हमारा पूरा जीवन सूना है।

7

'बच्चों में दृष्टि-दोष की समस्या'

इस युग की एक समस्या जो सभी को परेशान कर रही है वह है बच्चों में दृष्टि-दोष, बहुत कम आयु के बच्चे भी आज ऐनक लगाए देखे जाते हैं यहाँ तक की कोई-कोई बच्चे तो एक; दो वर्ष की छोटी आयु से ही ऐनक पहनने पर मजबूर होते हैं, इसका कारण पोषण की कमी हो सकती है और आज मिलावट चरम सीमा पर पहुँच गया है, ~~इसलिए~~ इसलिए शुद्धता समाप्त हो चुकी है साथ ही भागती दौड़ती ~~जीवन~~ जिंदगी में सोने-उठने के समय में भी परिवर्तन आने लगे है जिससे शरीर के साथ-साथ नेत्र भी कमजोर हो रहा है अत्याधिक पढ़ाई का बोझ और पोषण की कमी दोनों मिल कर यह समस्या उत्पन्न कर रही है यह हमारे समाज की गंभीर समस्या है और ~~हम~~ कहा जा सकता है कि आज के बच्चों में दृष्टि दोष इसे भी कहा जा सकता है कि आज के सही-गलत, अच्छे-बुरे में फर्क नहीं देख पा रहे है आज के अपने मन की करने पर आतुर है और माता-पिता की बातों पर ध्यान नहीं दे रहे है जिससे वे स्वंय को अंधकार में ढकेल रहे है और अपना भविष्य अपने हाथों नष्ट कर रहे है।

— से हमारे देश का भविष्य खतरे में है, बच्चों के

77

'खेल के क्षेत्र में उभरता भारत'

7. प्रगति की ओर बढ़ता भारत खेल की दुनिया में भी अपना एक स्थान बना रहा है, आज खेल का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ भारत का नाम न आता हो भले ही पहले स्थान पर भारत का नाम न हो परंतु स्थान तो है, और यह बात सराहनीय है कि भारतवासी निरंतर यह प्रयास कर रहे हैं कि वे अपने देश को पहला स्थान दिला सकें, क्रिकेट में पुरुष टीम तो अच्छा प्रदर्शन करती ही है पर आज महिला टीम भी इस खेल में चमत्कारी प्रदर्शन करती देखी जा रही है, साथ ही अन्य खेल जैसे - फुटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिन्टन इत्यादि सभी खेलों में भारत अच्छा करने का प्रयास कर रहा है, हमारे देश के राष्ट्रीय खेल 'हॉकी' में पहले स्थिति बहुत ही खराब थी परंतु आज स्थिति में सुधार साफ दृष्टिगोचर है साइना नेहवाल, सानिया मिर्ज़ा और धोनी, विराट, झूलन गोस्वामी के साथ-साथ आज अनेक युवा खिलाड़ी हर क्षेत्र में आगे आते दिख रहे है और खेलों में अच्छा प्रदर्शन करके देश का नाम श्रेष्ठ ऊँचाइयों पर ले जा रहे हैं।

10

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in